❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

इषं स्तोतृभ्य आ भर।

– सामवेद 971

हे ऐश्वर्यशाली परमात्मन्! स्तोताओं के लिए अन्न और धन प्रदान कर।

O the Bounteous Lord ! Bestow all kinds of food and wealth for your divotees.

वर्ष 41, अंक 18 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 19 फरवरी, 2018 से रविवार 25 फरवरी, 2018

विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118

दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8

फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्त्वावधान में भव्य ऋषि मेला सम्पन्न

दिल्ली में आर्यसमाज के कार्यक्रम में पहली बार 500 छात्रों द्वारा एक विधि से यज्ञ सम्पन्न

हर बच्चे को यज्ञ व संध्या करते देख दिल हो गया बाग-बाग – महाशय धर्मपाल, प्रधान

मन-वचन-कर्म से पाखण्ड व अंधविश्वास को छोड़ते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती के लक्ष्य को पूरा करें – स्वामी देवव्रत सरस्वती

जिस दिन महर्षि का बोध हर घर में पहुंचेगा, परिवार जाग्रत हो जाएंगे – साध्वी उत्तमायति

– शेष पृष्ठ 4-5 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में समस्त आर्यसमाजों के सहयोग से

आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह

फाल्गुन पूर्णिमा विक्रमी सम्वत् 2074 तदनुसार वीरवार 1 मार्च, 2018 सायं 3-30 से 7-15 बजे

स्थान : रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल,

राजाबाजार, कनॉट प्लेस (स्टेट्स एम्पोरियम के पीछे), शिवाजी स्टेडियम के पास, नई दिल्ली-1

नवसस्येष्टि यज्ञ : 3-30 बजे | विशिष्ट संगीत एवं हास्य रंग की प्रस्तुति | बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम

पुष्पों द्वारा होली-मंगल मिलन एवं प्रीतिभोज : 7-15 बजे

इस अवसर पर आपसे निवेदन है कि :-

होली मंगल मिलन के इस समारोह में आप सपरिवार इष्ट मित्रों सहित पधार कर समारोह की शोभा को बढाऐं तथा अन्य परिचित मित्रों एवं आर्य परिवारों को विशेष रुप से आमंत्रित करें।

नोट 1 : इस समारोह में भाग लेने वाले सबसे छोटी आयु के सदस्य, सबसे बड़ी आयु के सदस्य, सबसे बड़ी आयु के युगल एवं नव दम्पत्ति को पुरस्कृत किया जायेगा।

सभी आर्यजन दिन एवं समय नोट कर लें तथा सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित हजारों की संख्या में पहुंचकर समारोह को सफल बनाएं।

वेद-स्वाध्याय

अद्भुत, अनुपम, महान रक्षक

यानि चकार भुवनस्य यस्पतिः प्रजापतिर्मातरिश्वा प्रजाभ्यः।
प्रदिशो यानि वसते दिशाश्च तानि मे वर्माणि बहुलानि सन्तु।।- अथर्व. 19/20/2
ऋषिः **अथर्वाः।।** देवता - **मन्त्रोक्ताः।।** छन्दः **त्रिष्टुप्।**

शब्दार्थ - यः भुवनस्य पतिः = जो इस संसार का पति है उस **मातरिश्वा प्रजापतिः** = प्राणस्वरूप, सूक्ष्म प्राणशक्ति द्वारा संसार को चलाने वाले, प्रजाओं के रक्षक ने **प्रजाभ्यः** = अपनी प्रजाओं के लिए **यानि** = जिन कवचों को **चकार** = बनाया है और **यानि** = जिन कवचों को **प्रदिशः दिशश्च** = ये दिशाएं और प्रदिशाएं **वसते** = पहने हुई हैं **तानि वर्माणि** = वे कवच **मे** = मेरे लिए **बहुलानि सन्तु** = बहुत हों, प्रबल हों, पर्याप्त हों।

विनय- मुझे अब चिन्ता नहीं है कि यदि कोई मुझे हानि पहुंचाएंगे तो मैं उनसे कैसे अपने को बचाऊंगा। ये लोग अज्ञान से मुझे अपना शत्रु जानकर मुझे कभी विपद्ग्रस्त करना चाहेंगे तो उनसे बचने के लिए अब मैं न तो जेब मं पिस्तौल रखता हूं, न अङ्गरक्षकों की भांति किन्हीं साथियों से घिरा रहता हूं। इसके लिए न तो सार्वजनिक जीवन में किसी दल (पार्टी) बनाने की आवश्यकता समझता हूं, न ही विरोधी समझे जाने वाले के विरुद्ध कोई प्रचार (प्रोपेगेण्डा) करने की। एवं, विरोधियों से बचने के लिए मुझे अब कभी कोई भी योजनाएं (Schemes) बनाने और करने की चिन्ता नहीं होती, क्योंकि मैंने देख लिया है कि प्रभु ने, जोकि इस सब भुवन के पति हैं, रक्षक हैं, उन्होंने हम सबकी रक्षा का स्वयं ही पूरा प्रबन्ध कर रखा है। उस प्रजापति ने हम प्रजाओं की रक्षा के लिए सब स्थानों पर दिव्य वर्म (कवच) बना रखे हैं।

इन अदृष्ट कवचों का स्वरूप क्या है? ये हमारे व्यष्टि प्राणों में समष्टि प्राणों द्वारा मिलनेवाले हमारे शुभकर्मो के फलरूप हैं। जगद् व्यापक सूक्ष्म प्राण, मातरिश्वा या सूत्रात्मा वायु (हमारे अपने पापों से आयी विपत्तियों के अतिरिक्त अन्य) सब क्लेशों-भयों से हमारी निरन्तर रक्षा कर रहे हैं। यदि हमारा भोग नहीं है तो संसार में कोई भी हमारा बाल बांका नहीं कर सकता। जब हम देखते हैं कि हमें गोली मारने वाले का वार चूक जाता है, हमें हानि पहुंचाने की सब योजनाओं का ऐसा प्रभाव होता है कि उल्टे उनसे हमारा कल्याण हो जाता है, तब उस समय मातरिश्वा प्रजापति के इन अदृश्य कवचों की सत्ता सबको अनुभव हो जाती है। इन्हीं ईश्वरीय कवचों से सदा सुरक्षित देखते हुए ही सत्यनिष्ठ आस्तिक वीर लोग हजारों विरोधियों के बीच में निर्भय विचरा करते हैं। संसार के सब सच्चे आस्तिक पुरुषों को सर्वथा निर्भय, निश्चिन्त बनाने वाले ये ही प्रजापति के कवच हैं। इन्हें न देखकर हम तो यूं ही हजारों काल्पनिक भयों से पीड़ित तथा उनके प्रतिघात के लिए सदा चिन्तित रहते हैं। हे भुवनपते! मेरी तुमसे यही प्रार्थना है, यही याचना है कि मेरे लिए तुम्हारे दिये ये कवच सदा बहुत रहें, पर्याप्त रहें। मुझे किन्हीं अन्य निरर्थक संसारी कवचों की रक्षा-साधनों की आवश्यकता न हो। मैं सदा तुम्हारे इन्हीं महान् दुर्भेद्य, सर्वसमर्थ कवचों की रक्षा में रहूं।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

आर्यसमाज द्वारा घोषित 'अंधविश्वास निरोधक वर्ष-2018' पर विशेष

देखना एक दिन दयानन्द की सेना अंधकार को चीर देगी

.....वैदिक धर्म का नाम आये और उसके साथ यज्ञ का जिक्र न हो! कैसे हो सकता है? यज्ञ तो संस्कृति का पिता है। हमारे जीवन में यज्ञ का बड़ा महत्त्व है। हमारा कोई भी कार्यक्रम बिना यज्ञ के पूरा नहीं होता। सब संस्कार जन्म से लेकर मृत्यु तक यज्ञ से ही पूर्ण होते आये हैं। इसे ही भारतीय संस्कृति कहा गया है। भले ही कोई पौराणिक हो लेकिन उसे भी प्रत्येक कथा, कीर्तन, व्रत, उपवास, पर्व, त्योहार, उत्सव, उद्यापन सभी में यज्ञ अवश्य करना-कराना पड़ता है। बस इसमें हानि यह होती है कि यह लोग यज्ञ के असली स्वरूप को बिगाड़ देते हैं और जो परिवार यज्ञ के असली स्वरूप को नहीं समझते वह इसे ही स्वीकार कर लेते हैं।.....

ऋषि बोधोत्सव 13 फरवरी पर जिस-जिस ने रामलीला मैदान का यह सुन्दर नजारा देखा होगा निश्चित ही उसका मन गर्व और गौरव से प्रफुल्लित होकर, वैदिक धर्म का नाद कर उठा होगा। शाम के समय भले ही सूर्य ने प्रकाश को अपनी गोद में समेट लिया हो पर वेद की जलती ज्योति, यज्ञ की प्रचंड अग्नि शिखा ने मन और स्थान से अंधकार भगा दिया था। बच्चों की लम्बी-लम्बी कतारें, उनके मुख मंडल पर अनूठी आभा, सब कुछ व्यवस्थित, हर एक बच्चा मन, वचन कर्म से उत्साहित अपने-अपने यज्ञ पात्र लिए उचित दूरी पर जैसे परमात्मा के निकट बैठा दिखा। एक बार को तो मन में शंका उठी थी कि आयोजक इस विशाल यज्ञ प्रदर्शन को किस तरह व्यवस्थित करेंगे, क्योंकि कुछ बच्चे भले ही 10 से 15 वर्ष के करीब थे किन्तु अधिकांश बच्चे तो 10 वर्ष से कम आयु के भी थे, पर देखते ही देखते लगभग 10 मिनट के अन्तराल में हर एक बच्चा एक दिशा, एक पंक्ति में बिना किसी बहस और विवाद के, यज्ञ आसन मुद्रा में समान दूरी पर हवन कुंड सामने रखकर यज्ञ के लिए तैयार था। इससे हर कोई स्वयं में ही व्यवस्थापक नजर आ रहा था।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में पिछले काफी समय से 'घर-घर यज्ञ-हर घर यज्ञ' और स्थान-स्थान पर यज्ञ प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। जिनमें दिल्ली की विभिन्न आर्य समाजों एवं आर्य संस्थाओं, कन्या विद्यालयों, गुरुकुल आदि में यह प्रशिक्षण शिविर चलाये जा रहे हैं या ये कहिये वैदिक संस्कृति के अध्यात्मिक स्वरूप को बचाने के लिए ये ऋषि दयानन्द की फौज खड़ी की जा रही है।

इस विशाल यज्ञ प्रदर्शन में करीब 600 बच्चे थे, आगे बढ़ने से पहले बता दूँ यह कोई पौराणिक कहानियों का जादू का मन्त्र नहीं था बल्कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और समस्त समाजों और आर्य शिक्षण संस्थाओं के सहयोग का वह प्रतिफल था जिसने हर किसी को गद-गद होने पर मजबूर कर दिया। ये भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की विरासत को अगली पीढ़ी को सौंपने का वह पुनीत कार्य था जो प्रत्येक भारतवासी को करना ही चाहिए। ये ऋषि दयानंद के सपने के वैदिक रथ को उस मार्ग पर आगे बढ़ाने का कार्य था जिसमें आधुनिकता के नाम पर आज समाज में कुसंस्कार के गड्ढे खोद दिए गये हैं। संस्कार अर्थात् सदगुणों को गुणा करना अर्थात् बढ़ाना एवं दोषों को घटाना, अच्छी आदतें डालना एवं बुरी आदतें निकाल कर फेंकना, संस्कार कोई दवाई नहीं होती कि किसी को पिला दो और वह संस्कारी हो जाये। संस्कार बाल्यकाल का वह वातावरण होता है जिसमें उसके मन को जैसी छाप मिलती है, उसके मासूम मन की गीली सी मिट्टी पर जो लिखा जाता है वही सारी जिन्दगी अंकित रहता है।

यह सब मानते हैं कि यज्ञ भारतीय संस्कृति का आदि प्रतीक है। भला वैदिक धर्म का नाम आये और उसके साथ यज्ञ का जिक्र न हो! कैसे हो सकता है? यज्ञ तो संस्कृति का पिता है। हमारे जीवन में यज्ञ का बड़ा महत्त्व है। हमारा कोई भी कार्यक्रम बिना यज्ञ के पूरा नहीं होता। सब संस्कार जन्म से लेकर मृत्यु तक यज्ञ से ही पूर्ण होते आये हैं। इसे ही भारतीय संस्कृति कहा गया है। भले ही कोई पौराणिक हो लेकिन उसे भी प्रत्येक कथा, कीर्तन, व्रत, उपवास, पर्व, त्योहार, उत्सव, उद्यापन सभी में यज्ञ अवश्य करना-कराना पड़ता है। बस इसमें हानि यह होती है कि यह लोग यज्ञ के असली स्वरूप को बिगाड़ देते हैं और जो परिवार यज्ञ के असली स्वरूप को नहीं समझते वह इसे ही स्वीकार कर लेते हैं। उदहारण के लिए अभी पिछले दिनों मध्यप्रदेश में शराब से यज्ञ किया गया था जिसमें स्थानीय और दूर दराज से आये सैकड़ों लोग भी उपस्थित थे। यदि उनमें किसी एक को भी यज्ञ के वैदिक कालीन स्वरूप का ज्ञान होता तो क्या वह इसका विरोध नहीं करता? क्योंकि इसकी आड़ में हमारी शुद्ध परम्पराओं पर हमला हो रहा था।

ऐसे घोर अवैदिक कृत्यों को मिटाने के लिए ही आर्य समाज प्रयासरत है। इससे समाज को दो लाभ होंगे एक तो उन्हें कोई यज्ञ के नाम पर मूर्ख बनाकर धन, समय आदि की हानि नहीं कर सकता दूसरा यदि किसी के आस-पास कोई पुरोहित न भी हो तो वह इस क्रिया को स्वयं भी कर सकता है।

आज देश में यज्ञ प्रशिक्षण शिविर क्यों जरूरी है इसे समझने के लिए मात्र एक और छोटा सा उदहारण काफी होगा कि फरवरी माह में ही राजधानी दिल्ली के सुभाष पैलेस इलाके में घर की शुद्धि हवन तन्त्र क्रिया के नाम पर तांत्रिकों के कहने पर अभिभावकों ने अपनी बेटी को तांत्रिक के हवाले कर दिया और तांत्रिक लगातार उससे 12 वर्ष दुष्कर्म करता रहा। यहाँ पर फिर वही सवाल खड़ा होता है कि यदि उक्त परिवार में कोई एक भी सदस्य वैदिक यज्ञ प्रक्रिया को जानता, समझता तो क्या वह तांत्रिक इस नीच कार्य में सफल हो पाता? शायद नहीं क्योंकि यज्ञ में समिधा, सामग्री, घी, जल, कपूर आदि के अलावा किसी चीज की आवश्यकता शायद ही पड़ती हो। लेकिन शर्म का विषय यह है कि आज अनुष्ठानों के नाम पर तांत्रिक अस्मत तक रोंद रहे हैं।

लेकिन अब यह लोग सफल नहीं होंगे, नौजवानों में बच्चों के रूप में खड़ी हो रही यह महर्षि दयानन्द की सेना इस अंधकार को चीर कर रख देगी। इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव पर 600 बच्चे थे तो अबकी बार अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में यज्ञ प्रदर्शन में दस हजार का लक्ष्य है। भारत की समस्त आर्य समाजें इस कार्य को गति देंगी तो एक दिन यह संख्या लाखों करोड़ों में होगी। ऐसा हमें विश्वास है। - ***सम्पादक***

अधकचरे तर्क और उनसे लीपा-पोती

...प्रेम-प्रसंग के कारण युवती के माता-पिता व परिजनों ने मिलकर अंकित सक्सेना की बेरहमी से गला काटकर हत्या कर दी। अंकित का कसूर इतना था कि उसने हिन्दू होकर एक मुस्लिम लड़की से शादी कर अपना घर बसाना चाहा था। जिसके लिए युवती भी तैयार थी लेकिन युवती के पिता और रिश्तेदारों ने चाकू निकाला और देखते ही देखते सरेराह कुछ पलों में अंकित का गला रेत दिया।.....यह घटनाएं सिर्फ खबरें नहीं हैं, इनमें कुछ साझे तत्व हैं, पर सामाजिक सद्भावना, अल्पसंख्यक समुदाय का राग, इन सब सवालों का मुंह भींचता सा दिखाई दे रहा है। तटस्थ होकर इंसानियत की बात हुए तो देश में एक अरसा सा बीत गया। कलम के धनी लोग राजनीतिक टोलो में बंटे से दिखाई दे रहे हैं तो फिर तिरंगे के लिए गिरी चंदन की लाश पर कोई आंसू क्यों बहायेगा' न कोई सवाल उठेगा।.....

अजीब सा शोर है! गरीबी, बेरोजगारी और तमाम समस्या अँधेरे में खामोश बैठी है। राजनीति के ग्राउंड पर खेल खेला जा रहा है। चंदन गुप्ता की देशभक्ति पर सवाल, अंकित सक्सेना की गला रेतकर हत्या, मेवात से धर्मांतरण की उठती सिसकियां और कश्मीर घाटी से उठती अलगाव की आंधी बता रही है कि असली खेल यही है। घटनाएं होंगी, बवंडर होंगे, आंसू भी होंगे लेकिन प्रगतिशील संवेदनशीलता की जगह मक्कार सियासत होगी। इसके बाद न्यूज रूम में टॉक शो होंगे, बहस होगी, अगले-पिछले उदाहरण देकर रोजाना की बहस के दंगल से राजनितिक पहलवान उठकर चले जायेंगे। ब्रेक लिया जायेगा फिर अगली ब्रेकिंग न्यूज का इंतजार होगा।

कासगंज घटना को कुछ दिन बीत गये। तिरंगा यात्रा पर हमले में मारा गया चंदन अभी जीवन के 20 बसंत ही देख पाया था। लेकिन उसकी चिता की राख के साथ अधकचरे तर्कों से सवाल भी ठंडे हो गये। अनुग्रह शंकर लिखते हैं कि चन्दन गुप्ता की हत्या मामले में कहा गया कि तिरंगा यात्रा जान-बूझकर मुस्लिम मुहल्ले से निकाली गई और यहां 'पाकिस्तान मुर्दाबाद' के नारे लगाए गए! जबकि सवाल यह होना चाहिए कि क्या मुस्लिम मुहल्लों में तिरंगा वर्जित है? दूसरा चन्दन को गोली मारने वाला अपराधी कौन था? उसके पास हथियार कहां से आया? पर इन गंभीर सवालों की जरा भी चर्चा न करते हुए बात गणतंत्र दिवस का जुलूस निकाल रहे युवकों की गलती बताते हुए मामले को मोड़ने की कोशिश हुई। साथ ही मीडिया का एक धड़ा इस बात को लेकर मुखर रहा कि क्या देश में अब तिरंगा यात्रा जरूरी है?

इसके बाद की खबर पढ़ें तो राजधानी दिल्ली के रघुवीर नगर इलाके में प्रेम-प्रसंग के कारण युवती के माता-पिता व परिजनों ने मिलकर अंकित सक्सेना की बेरहमी से गला काटकर हत्या कर दी। अंकित का कसूर इतना था कि उसने हिन्दू होकर एक मुस्लिम लड़की से शादी कर अपना घर बसाना चाहा था। जिसके लिए युवती भी तैयार थी लेकिन युवती के पिता और रिश्तेदारों ने चाकू निकाला और देखते ही देखते सरेराह कुछ पलों में अंकित का गला रेत दिया। लेकिन यहाँ भी मीडिया ने ये कहा कि हत्या तो हत्या है, कातिल तो कातिल है, क्या इतना कहना काफी नहीं होता? इस घटना को हिन्दू मुस्लिम से जोड़कर नहीं देखा जाना चाहिए। एक अखलाक, पहलू खां, और अफराजुल की हत्या को एक अरब हिन्दुओं से जोड़ने वाले लोग आखिर अंकित सक्सेना की हत्या को 20 करोड़ मुस्लिमों से नहीं जोड़ पाए?

कुछ लोगों ने कहा कि ऐसी घटनायें तो अक्सर गोत्र, जात और गाँव में इज्जत के नाम पर अंजाम दे दी जाती है। हाँ ये कहने वाले गलत नहीं हैं किन्तु क्या आजतक किसी आपसी विवाद व रंजिस में अखलाक या पहलू खां की जान नहीं गयी? जब केरल में एक हादिया के मामले पर सुप्रीम कोर्ट उसकी जाँच के आदेश एनआईए को देता है तब मामला प्रेम की नजरों से देखा जाता है। इसे युवाओं को प्रेम करने जैसे स्वतंत्र अधिकारों में गिना जाता है। लेकिन जब इसी प्रेम की भेंट एक अंकित सक्सेना चढ़ता है तो इसे सम्मान के लिए हत्या अर्थात ऑनर किलिंग बताकर न्यूज रूम ब्रेक ले लेते हैं।

पर लोगों के जेहन में उफन रहे सवाल ब्रेक कैसे लें? क्या वामपंथ की कलम समाजवाद की रक्षा छोड़कर अब सीधे कट्टर इस्लामवाद की रक्षा करती आसानी से नहीं दिख रही है? सवालों की फेरिहस्त में सबसे बड़ा सवाल यह भी है कि अंकित की हत्या के वक्त वहां बड़ी भारी भीड़ मौजूद थी। यदि भीड़ अंकित के बचाव में हत्यारों पर हमला कर देती तो इसे हिन्दुत्त्व से जोड़कर देखा जाना लाजिमी था। कहा जा रहा कि किसी मामले में जब एक पक्ष हिन्दू और दूसरा मुसलमान हो तो ज्यादातर लोग तर्क, तथ्य और न्याय का साथ छोड़कर अपने धार्मिक हित के साथ खड़े नजर आते हैं लेकिन ये शुरुआत किसने की? शाहबानो के मामले में संविधान पर पहले चोट करने वाले कौन थे?

एक और खबर मेवात की भी है देश की राजधानी से सिर्फ 80 किमी. दूर मेवात से जहां अनुसूचित जाति के हिन्दुओं को मुस्लिम दबंगों द्वारा इस्लाम स्वीकार करने का दबाव बनाते हुए मारा-पीटा गया और मुसलमान न बनने पर गांव छोड़ने की 'धमकी' तक दी गई। इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना को भी अनुग्रह शंकर की माने तो अधकचरे, असंवेदनशील और बेहद आपत्तिजनक तर्कों से ढ़कने की कोशिशें भी हुई। हमेशा की तरह मीडिया में बैठे मौलानाओं ने कहा इस्लाम इस चीज की आज्ञा नहीं देता पर मुरझाया सा सवाल वहीं खड़ा है कि यदि इस्लाम इस चीज की आज्ञा नहीं देता तो फिर ऐसा करने की आज्ञा कौन देता है?

मेवात की घटना पर भी तर्कों की बोछार हुई, चूंकि मामला देहाती इलाके का था खबर आसानी से पहले ही दब गई थी, इसलिए उनकी जरूरत ही नहीं पड़ी। दरअसल मामला दलित समुदाय से जुड़ा था तो जय भीम-जय मीम वाले राजनितिक योद्धा अपनी जबान की तलवार और दलित संवेदना की ढ़ाल किनारे रखते नजर आये। हाँ यदि यह मामला दलितों और अन्य जाति समुदाय के बीच होता तो पत्रकारों से लेकर नेताओं तक की गाड़ी गाँव-गाँव घूमकर कोसती नजर आती। अम्बेडकर ने चाहे जो कहा हो, आज इस्लाम ने दलितों के साथ चाहे जो सुलूक किया हो, पर मेवात का दु:ख कोई नहीं मनाएगा, क्या कोई गला नहीं भार्रायेगा?

अब थोड़ा ध्यान देने वाली बात यह भी है कि यह घटनाएं सिर्फ खबरें नहीं हैं, इनमें कुछ साझे तत्व हैं, पर सामाजिक सद्भावना, अल्पसंख्यक समुदाय का राग, इन सब सवालों का मुंह भींचता सा दिखाई दे रहा है। तटस्थ होकर इंसानियत की बात हुए तो देश में एक अरसा सा बीत गया। कलम के धनी लोग राजनीतिक टोलो में बंटे से दिखाई दे रहे हैं तो फिर तिरंगे के लिए गिरी चंदन की लाश पर कोई आंसू क्यों बहायेगा' न कोई सवाल उठेगा। प्रेम के नाम पर अंकित सक्सेना की हत्या पर भला कोई त्योरियां क्यों चढ़ेंगी, न कोई उंगली उठेगी और मेवात! क्या बात करते हैं साहब! ये तो कोई मुद्दा ही नहीं है। बस खेल देखो और उसपर बिछी बिसात देखो।

-राजीव चौधरी

बोध कथा

तीन प्रकार के मनुष्य

आजकल तीन प्रकार के मनुष्य हैं, उनकी बात सुनिये।

महाराज अकबर बैठे थे अपनी राजसभा में। बहुत बड़े ज्ञानी और विद्वान् उनके मंत्री थे। उनमें एक बीरबल भी थे। अकबर सबसे अधिक उनका सम्मान करते थे। इस बात से दूसरे लोगों को ईर्ष्या होती थी। एक दिन बीरबल सभा में नहीं गये तो कुछ लोगों ने राजा से शिकायत की, ''आप बीरबल का तो बहुत सम्मान करते हैं, हमारा कम। बीमबल में ऐसी क्या विशेषता है, जो हममें नहीं है?''

राजा ने देखा कि इन लोगों में ईर्ष्या जागृत हो गई है; बोले-''अच्छी बात। बीरबल हमारे प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देता है। तुम भी एक प्रश्न का उत्तर दे दो।''

राजा ने कहा-''देखो, यहां से अथवा बाहर से, दो अबके ले आओ, दो तबके ले आओ, और दो ऐसे लाओ जो न अबके हों, न तबके।''

दरबारियों ने सोचा कि राजा आज भांग पी गया है, अन्यथा इस प्रश्न का क्या अर्थ? बोले-''महाराज! हमने ठीक से सुना नहीं कि आपने क्या कहा।''

महाराज बोले- ''नहीं सुना तो ध्यान पूर्वक सुनो! यहां से बाहर जाकर दो अबके ले आओ, दो तबके ले आओ, दो ऐसे लाओ जो न अबके हों, न तबके।''

दरबारियों के पल्ले अब भी कुछ न पड़ा। तभी बीरबल आ गये। महाराज को नमस्ते की। सबको मौन देखकर बोले-''महाराज! ये सब लोग मौन क्यों हैं?''

महाराज ने कहा-''ये लोग तुमसे ईर्ष्या करते हैं। कहते हैं कि जिस प्रकार तुम प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देते हो, उसी प्रकार ये भी दे सकते हैं। मैंने इनसे एक प्रश्न पूछा, उसका उत्तर इन्हें सूझता नहीं।''

बीरबल ने पूछा-'क्या प्रश्न था वह?'

महाराज ने कहा-''मैंने इन्हें आदेश दिया था कि दो अबके ले आओ, दो तबके, और दो ऐसे हों जो अबके हों न तबके।''

शेष अगले अंक में

- महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्त्वावधान में ...

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्त्वावधान में 13 फरवरी 2018 को दिल्ली के रामलीला मैदान में आयोजित भव्य ऋषि मेला का शुभारम्भ आचार्य आनन्द प्रकाश आर्य के निर्देशन में यज्ञ से सम्पन्न हुआ। यज्ञ में यज्ञमान श्रीमती उषा व श्री सुभाष चान्दना, श्रीमती प्राची व श्री सुविदित शर्मा, श्रीमती सुचिता व श्री अमन नारंग, श्रीमती वन्दना व श्री आदित्य आर्य तथा श्रीमती सविता व श्री वीरसेन मुखी ने बड़ी श्रद्धा व भक्ति भाव से वेदमंत्रों से बोधोत्सव के पावन अवसर पर प्रभु का गुणगान करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती के ऋण से उऋण होने का प्रयास किया व उपस्थित आर्य बन्धुओं का आशीर्वाद व शुभकामनाएं प्राप्त कीं।

यज्ञोपरान्त यू.एस.ए. से पधारे समाज सेवी श्री सुदेश मुखी ने ओ३म् ध्वज फहराया व संगीतमय ध्वज गीत प्रस्तुत कर विधिवत् कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया।

श्री लक्ष्मीकान्त संगीत प्रवक्ता व श्री तरंगकान्त ने संगीतमय गायत्री मंत्र व 'तेरी युग-युग तक अमर कहानी हम भूल नहीं सकते...' जैसे सुमधुर भजनों को प्रस्तुत किया। दयानन्द आदर्श विद्यालय तिलक नगर ने संगीतमय प्रस्तुति दी। महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, शादीखामपुर के विद्यार्थियों ने पाखण्ड और अन्धविश्वास पर प्रस्तुति दी।

ऋषि मेला का शुभारम्भ महाशय धर्मपाल सभा प्रधान एवं चेयरमैन एम.डी.एच. की अध्यक्षता में हुआ। इस अवसर पर साध्वी डॉ. उत्तमायति जी ने आशीर्वाद देते हुए अपने ओजस्वी उद्बोधन में कहा, 'जिस दिन ऋषि दयानन्द को अपने अन्दर, अपने बच्चों के हृदयों में, अपने घरों में बिठाएंगे ऋषिवर हर घर में पहुंच जाएंगे, परिवार जाग्रत हो जाएंगे। हमने गुरुओं को गुरुद्वारों में, देवों को मंदिरों में और अपने ऋषिवर को आर्य समाजों में बन्द करके रख दिया है। इसीलिए आज जागने की और जगाने की जरूरत है। आज शिवरात्रि को सब जानते हैं लेकिन ऋषि बोधोत्सव को नहीं जानते।' स्वामी देवव्रत सरस्वती, प्रधान सेनापति, स.आ.वीरदल ने आर्यजनों को आह्वान करते हुए कहा हम सबको मिलकर एक मन, वाणी व कर्म से महर्षि दयानन्द सरस्वती के लक्ष्य को पूरा करना है ताकि इस संसार का हर जीव पाखण्ड, कुरीतियों व द्वेष से बचते हुये सुखमय जीवन व्यतीत करे।'

आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक ने संस्कृति के इतिहास को खगालते हुए ऋषिबोध को सिद्ध करते हुए कहा 'अब स्थिति सुनने-सुनाने की नहीं बल्कि कुछ कर गुजरने की है। यदि यज्ञ हर घर तक पहुंच जाएगा तो महर्षि के सपने को साकार करने में बहुत देर नहीं लगेगी।' डॉ. सुधीर कल्हन, अध्यक्ष नाड़ी तन्त्र केन्द्र सर गंगाराम अस्पताल ने महर्षि दयानन्द के आदर्शों और कार्यों का वर्णन करते हुए कहा 'मैंने महर्षि जी से जो बातें सीखी मैं उन्हें आपके साथ शेयर करना चाहूंगा 1. मानसिक स्वास्थ्य, 2. शारीरिक स्वास्थ्य, 3. त्याग और क्षमा और 4. नारी का विकास और उनकी पूजा करना। मैं बहुत खुश हूं कि मैं आर्य समाजी हूं।'

सर्वश्री ओम प्रकाश आर्य उपप्रधान, शिव कुमार मदान उप प्रधान, धर्मपाल आर्य प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, सुरेन्द्र रैली वरिष्ठ उपप्रधान, विक्रम नरूला, कीर्ति शर्मा, राजेन्द्र दुर्गा, अरुण प्रकाश वर्मा, प्रेमपाल शास्त्री, योगेन्द्र आर्य, हरिओम बंसल, एस. पी. सिंह, जय प्रकाश शास्त्री ने मंच की शोभा बढ़ा रहे थे।

बोधोत्सव पर श्री सुरेश ग्रोवर आर्य कार्यकर्ता स्मृति पुरस्कार से श्री सन्दीप आर्य सुपुत्र श्री महेन्द्र आर्य, माता छज्जिया देवी आर्य विद्वान पुरस्कार से श्रीमती उमा वधवा धर्मपत्नी श्री रमेश वधवा, माता रुक्मणि देवी स्मृति पुरकार से श्री महेन्द्र सिंह लोचन सुपुत्र श्री जय लाल लोचन, श्री लामन आर्य वैदिक विद्वान् पुरस्कार से श्री रघुवीर वेदालंकार सुपुत्र श्री हरि सिंह, श्री राजीव आर्य स्मृति पुरस्कार से श्री सुनहरी लाल यादव सुपुत्र श्री गेन्दा लाल यादव को तथा श्री रामकिशन तनेजा सेवा सम्मान से डॉ. घनश्याम बरिक सुपुत्र श्री बसु देव बरिक को सम्मानित किया गया।

- जारी पृष्ठ 5 पर

बोधोत्सव के अवसर पर उद्बोधन देते सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती जी तथा इस अवसर पर मंचस्थ अतिथि एवं पदाधिकारी

उद्बोधन देते केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी, साध्वी उत्तमा यति जी, डॉ. रघुवीर वेदालंकार जी, डॉ. सुधीर कल्हन जी, श्री कीर्ति शर्मा जी एवं श्री योगेन्द्र यज्ञिक जी।

उद्बोधन देते दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री सतीश चड्डा जी, उप प्रधान श्री कीर्ति शर्मा जी एवं इस अवसर पर यज्ञ में आहुतियां प्रदान करे यजमान परिवार।

विभिन्न यज्ञ प्रशिक्षण शिविरों में प्रशिक्षण के उपरान्त एक रूपयज्ञ का किया अद्भुत प्रदर्शन

बोधोत्सव के अवसर पर रामलीला मैदान में एकरूप यज्ञ का वृहद स्तर पर हुआ प्रदर्शन : आचार्य आनन्द प्रकाश, आचार्य सत्यप्रकाश जी ने सम्पन्न कराया यज्ञ ।

विभिन्न आर्य विद्यालयों, आर्यसमाजों, संस्थाओं में प्रशिक्षण पाकर एक साथ यज्ञ क्रियाओं की प्रस्तुति देने के लिए पधारे 500 से अधिक प्रशिक्षु

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा महामंत्री श्री विनय आर्य ने यज्ञ विषयक जानकारी देते हुए कहा गौ घृत, समिधा, हवन सामग्री के उचित तालमेल से पर्यावरण शुद्धि तथा स्वास्थ्य वर्धन होता है। महामंत्री श्री सतीश चड्ढा ने कहा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा चलाए जा रहे 'घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ' के अन्तर्गत दिल्ली के स्कूलों में यज्ञ प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं जिसका संचालन श्री विनय आर्य द्वारा किया गया। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के प्रचार-प्रसार के लक्ष्य को पूरा करना है तो हर घर तक यज्ञ को पहुंचाना होगा। इसका प्रयास विभिन्न आर्य समाजों व आर्य विद्यालयों में शिविर आयोजित कर किया गया। यज्ञ की जानकारियां साझी की गई तथा यज्ञ करने की वैदिक पद्धति की वैज्ञानिक जानकारियों को समझाते हुए यज्ञ प्रशिक्षण दिया गया क्योंकि महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा पुरुष मात्र के लिए प्रदत्त मार्ग देव यज्ञ के प्रचार-प्रसार के अनुपालन करते हुए आज लगभग 500 आर्य जनों द्वारा सामूहिक प्रस्तुति दी गई जिसे देखकर आर्यजनों को बहुत प्रसन्नता हुई। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य आनन्द जी, आचार्य राम निवास जी और आचार्य सत्य प्रकाश जी थे। आज आर्य समाज पंजाबी बाग पश्चिम, आर्य समाज जनकपुरी सी-3, आर्य समाज नजफगढ़, आर्य समाज प्रीतविहार, आर्य समाज कीर्तिनगर, आर्य समाज रानीबाग, आर्य समाज सैनिक विहार, आर्य समाज शादीखामपुर, आर्य समाज तिहाड़गाव, आर्य समाज रघु नगर, दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलकनगर के प्रशिक्षणार्थियों ने सामूहिक प्रस्तुति की। एक रूपीय यज्ञ की व्यवस्था में श्री नरेन्द्र गांधी(आजाद मार्केट) ने कैनवास प्रदान की तथा सर्वश्री विनय आर्य महामंत्री, विजेन्द्र आर्य, सुरेन्द्र चौधरी, महेन्द्र गर्ग, आदित्य मिश्रा, प्रदीप गुप्ता, संदीप आर्य, नीरज आर्य, सौरभ यादव, बिपिन भल्ला, देवेन्द्र सचदेवा, वीरेन्द्र सरदाना, कर्मवीर आर्य ने महत्त्व पूर्ण योगदान दिया। महाशय धर्मपाल जी ने यज्ञोपरान्त बच्चों को आशीर्वाद देते हुए कहा, 'हर बच्चे को यज्ञ व संध्या करते देख मैं बाग-बाग हो गया। समाज में पाखण्ड, अंधविश्वास मिटाकर वैदिक सिद्धान्तों को तथा घर-घर यज्ञ की सुगंन्धि फैलाएं।' इस कार्यक्रम में भोजन व्यवस्था में श्री वीरेन्द्र आर्य, श्री देवेन्द्र नागपाल व जनकपुरी आर्य समाज के आर्य वीरों ने सहयोग दिया तथा जल सेवा श्री मनोज आर्य (कमला मार्केट) की ओर से की गई। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

- सतीश चड्ढ़ा, महामंत्री

ऋषि जन्मभूमि टंकारा में महर्षि दयानन्द बोधोत्सव सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य की अध्यक्षता

टंकारा में महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में 13 फरवरी को महाशिवरात्रि के दिन ऋषिबोधोत्सव का आयोजन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। टंकारा के ट्रस्टियों द्वारा श्री सुरेश चन्द्र आर्य का फूलहार से स्वागत किया गया। अमेरिका से पधारे श्री गिरीश खोसला, मुंबई से श्री सुनील मानकतला, श्री लधाभाई तथा श्री अरुण अब्रोल, दिल्ली के श्री योगेन्द्र मुंजाल, श्री सुधीर मुंजाल तथा अनेक संत गण मंच की शोभा बढ़ा रहे थे। बोधोत्सव का शुभारम्भ गुरुकुल कांगड़ी के वेद विभागाध्यक्ष डॉ. रूप किशोर शास्त्री ने अत्यन्त दु:ख व्यक्त करते हुए कहा कि सरकारी आंकड़ों के अनुसार संस्कृत भाषा बोलने वालों की संख्या निरन्तर घटती जा रही है और यदि यही क्रम चालू रहा तो भविष्य में सरकार से संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु किसी भी प्रकार का सहयोग मिलना बन्द हो जायेगा। उन्होंने कहा कि ऋषि बोधोत्सव पर यह संकल्प

- शेष पृष्ठ 6 पर

समारोह की अध्यक्षता करते सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी साथ में हैं अमेरिका आर्य प्रतिनिधि सभा से पधारे श्री गिरीश खोसला जी, उनके सुपुत्र, श्री योगेश मुंजाल जी एवं अन्य अतिथिगण

महर्षि दयानन्द आर्य विद्या निकेतन भामल में विद्यालय भवन उद्घाटन सम्पन्न

बाजना रोड स्थित महर्षि दयानन्द आर्य विद्या निकेतन, भामल में आयोजित स्नेह सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसके मुख्य अतिथि महाशय धर्मपाल चेयरमैन एम.डी.एच. ने 10वीं कक्षा तक के स्कूल विस्तार कार्य का शिलान्यास किया। कार्यक्रम में ग्रामीणों ने महाशय जी का भव्य स्वागत किया। अतिथि क्षेत्रीय विधायक कलसिंह भाबर ने पानी की टंकी बनवाने की घोषणा की वहीं महर्षि दयानन्द आर्य विद्या निकेतन आश्रम में भी सहयोग के रूप में 3 लाख रुपए देने की घोषणा की, ग्राम पंचायत के प्रथम नागरिक सरपंच नागूसिंह डामर ने संस्था के लिए सार्वजनिक शौचालय बनाने की घोषणा की।

थाना प्रभारी श्री कांतिलाल सिंगाड ने बच्चों को अच्छी शिक्षा प्राप्त करके आगे एक बड़े अधिकारी बनने के लिए प्रेरित किया साथ ही अभिभावकों को भी बच्चों को शिक्षा के लिए स्कूल भेजने की अपील की। जनपद सीओ लक्ष्मण डिंडोड ने भी स्कूल में सहयोग देने की अपील की। जिसका सभी ग्रामीणों द्वारा तालियां बजाकर स्वागत किया। बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस कार्यक्रम में ग्रामीण व बच्चों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। आभार प्राचार्य संजय पाड़ी ने किया।

Veda Prarthana - II
Regveda -1 (A)

God Promotes Virtuous Prosperity and Wealth

- Acharya Gyaneshwarya

गयस्फानो अमीवहा वसुवित्पुष्टिवर्द्धनः।
सुमित्रः सोम नो भव।।

ऋग्वेद 1/6/21/12

Gayasfano amivaha
vasuvit pushtivardhanah.
Sumitrah soma no bhava.
(Rig Veda 1:6:21)

"Why should we believe or worship God?" or "Why should we pray or meditate?" When one asks such questions to children or most adults who go through the ritual of 'worship of God', the usual answers are the following: to ask God to fulfill their desires and wishes; to thank God; to please God [as though God is an unhappy person (in the Vedas God is called Perfect and without desires)] or so that God will be pleased with them; they fear otherwise God will get upset with them and punish; their parents taught them to do so; they see their friends and others pray and worship; and finally some persons state that they are not totally sure why they pray but prayer makes them feel better or gives them temporary peace. While these responses may have some validity, they are not adequate answers because we must first know what God is capable of giving us, and what He is not, as well as how and when He fulfills our prayers. Until we correctly understand these issues, even though we may be currently going through the rituals of prayer and worship, we will not develop a deep abiding faith in God, or make a true commitment and be willing to accept any hardship in following God's message. Only with correct understanding of what God is, we will be able o properly pray and meditate in the future.

This mantra describes what we receive from God when we properly pray to Him. First, God in this mantra is called Gayasfan i.e. who increases our wealth. What type of wealth? Not the usual monetary wealth most of us are familiar with and crave, instead God gives us correct virtuous knowledge, bright and sharp mind, keen intellect and wisdom, all of which will help us earn and gain virtuous monetary wealth. God gives us inspiration, courage, discipline, will power to do hard work, patience, and faith in the fact that such practices lead to long-term success. These inner virtuous qualities are the true basic wealth that not only enabl eus to earn monetary wealth, bank accounts, houses, gole, silver and prosperity but also how to use the same for our own and others' benefit. Therefore, when we pray to God we should always first make our best effort and then ask for God's help in us acquiring above said inner virtuous qualities. Once we so succeed in life, then gaining monetary wealth and prosperity will become easier.

Second, this mantra states that God is Amivaha, which means God helps us get rid of our physical and mental ailments because He is the ultimate healer. God not only helps us learn about various herbs and medicines to cure illnesses but also helps us understand the causes of illnesses i.e. why the illness arose in the first place. Moreover, God helps us learn methods to prevent illnesses from occurring in the future. The main reasons illnesses arise are ignorance, laziness, carelessness, and lack of discipline in how we live our daily lives, what we eat and/or drink, whether or not we adequately exercise, and how we intreract with others. Illnesses of course can e either physical or mental, or both together, and God helps us overcome both physical and mental illnesses. God promotes our physical health by helping us develop healthy personal habits such as discipline in life, learning to eat satvik i.e. healthy nutitious foods (see mantra # for details), performing daily physical exercises, and practicing pranayam to strengthen our breathing and neural energy. God also helps improve our mental health by helping us change our personal lives towards adopting virtuous values in our daily living such as truth, honesty, integrity, patience as well as care and love of fellow beings, all of which enhance our mental well-being. A true devotee of God learns to make a commitment to carry out changes described above instead of finding excuses or blaming others for one's failures.

To Be Continue....

पृष्ठ 5 का शेष

लेने की आवश्यकता है कि हम संस्कृत भाषा को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनायेंगे।

विशिष्ट अतिथि डी.ए.वी. ऐडेड स्कूल्स के निदेशक श्री जे.पी. शूर ने कहा कि हम डी.ए.वी. स्कूलों के माध्यम से संस्कृत भाषा की समस्या को नारी सुरक्षा की समस्या को तथा अन्य सामाजिक कमजोरियों को दूर करने का प्रयत्न करते हुए ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाएंगे। इस अवसर पर अध्यक्षीय सम्बोधन में श्री सुरेश आग्र ने सभी आर्य बन्धुओं तथा बहनों से अपील की कि ऋषि बोधोत्सव पर स्वामी दयानन्द के प्रति सबसे सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम सब आर्य समाज के लिये प्रति दिन कुछ न कुछ करने का संकल्प लें। हम सबके लिए यह एक गम्भीर चिन्तन का विषय है कि एक लम्बा युग बीत जाने के बाद भी ऋषि के सभी कार्य अधूरे पड़े हैं। चाहे 'कृणवन्तो विश्वमार्यम्' का कार्य हो अथवा 'वेदों की ओर लौटने' का कार्य हो, चाहे 'पाखण्ड और अंधविश्वास' को दूर करने का कार्य हो अथवा पूरे देश में 'वैदिक शिक्षा व्यवस्था' का कार्य हो, चाहे 'धर्म परिवर्तन रोकने' का कार्य हो अथवा पूरे देश में 'मानव-मात्र की शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति'' का कार्य हो, सभी काम अधूरे पड़े हैं। इन कार्यों को पूरा करने का अब समय आ चुका है। प्रत्येक आर्य के संकल्प लेने से ही ये कार्य पूरे होंगे। 'युवा शक्ति' जो आर्य समाज की रीढ़ की हड्डी है उसे भी हमें सही मार्ग दर्शन देकर अपने साथ जोड़ना है तभी हम देव दयानन्द के सपनों को पूरा कर सकेंगे। हमें निराश नहीं होना है, लेकिन निरन्तर काम करना है। आने वाला भविष्य वैदिक संस्कृति और वैदिक विज्ञान का होगा। आर्य समाज पुनः अपनी बुलन्दियों पर होगा।' संचालक श्री अजय सहगल के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। - ***मन्त्री***

सेवक की आवश्यकता है

आर्य समाज दयानन्द विहार दिल्ली-110092 में एक आर्य विचारों वाले सेवक की आवश्यकता है। रहने, बिजली-पानी आदि के अतिरिक्त योग्यता व क्षमता के अनुसार नकद राशि भी दी जा सकती है। प्रार्थना पत्र, योग्यता व आधार कार्ड की प्रति सहित, मंत्री आर्य समाज दयानन्द विहार, दिल्ली-92 के नाम तुरन्त प्रेषित करें।

- ईश नारंग, मंत्री मो. 9911160975

प्रेरक प्रसंग

जाओ, अपनी मां से पूछकर आओ

देश-विभाजन से बहुत पहले की बात है, देहली में आर्यसमाज का पौराणिकों से एक ऐतिहासिक शास्त्रार्थ हुआ। विषय था- 'अस्पृश्यता धर्मविरुद्ध है- अमानवीय कर्म है।'

पौराणिकों का पक्ष स्पष्ट ही है। वे छूतछात के पक्ष के पोषक थे। आर्यसमाज की ओर से पण्डित श्री रामचन्द्रजी देहलवी ने वैदिक पक्ष रखा। पौराणिकों की ओर से माधवाचार्यजी ने छूतछात के पक्ष में जो कुछ वे कह सकते थे, कहा।

माधवाचार्यजी ने शास्त्रार्थ करते हुए एक विचित्र अभिनय करते हुए अपने लिंग पर लड्डू रखकर कहा, आर्यसमाज छूतछात को नहीं मानता तो इस अछूत (लिंग) पर रक्खे इस लड्डू को उठाकर खाइए।

इस पर तार्किक शिरोमणि पण्डित रामचन्द्रजी देहलवी ने कहा, तुम चाहे इस अछूत पर लड्डू रखो और चाहे इस ब्राह्मण (मुख की ओर संकेत करते हुए कहा) पर, मैं लड्डू नहीं खाऊँगा, परन्तु एक बात आप बताएँ। जाकर अपनी माँ से पूछकर आओ, क्या तुम इसी अछूत (लिंग) से जन्मे हो अथवा इस ब्राह्मण (मुख) से?

पण्डित रामचन्द्रजी देहलवी की इस मौलिक युक्ति को सुनकर श्रोता मन्त्र-मुग्ध हो गया। आर्यसमाज का जय-जयकार हुआ। पोंगा पंथियों को लुकने-छिपने को स्थान नहीं मिल रहा था। इस शास्त्रार्थ के प्रत्यक्षदर्शी श्री ओम्प्रकाशजी कपड़े वाले मन्त्री, आर्यसमाज नया बाँस, दिल्ली ने यह संस्मरण हमें सुनाया। अन्धकार-निवारण के लिए आर्यों को क्या-क्या सुनना पड़ा।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु
साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

आओ ! संस्कृत सीखें

पूर्वकालिक कत्वा व ल्यप प्रत्यय (43)

गतांक से आगे....

तुमुन् प्रत्यय (को, के लिए)

को या के लिए अर्थ को प्रकट करने के लिए धातु से तुमुन् प्रत्यय होता है। तुमुन् का तुम् शेष रहता है। तुमुन् प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होता है अतः इसके रुप नहीं चलते हैं।

उदाहरण- सः कार्य कर्तुम् इच्छति। यहां धातु में तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग हुआ है अतः वाक्य का अर्थ हुआ ''वह कार्य करने को चाहता है''।

2. अहं फलानि खादितुम् इच्छामि।
मैं फलों को खाना चाहता हूं।
3. नेता सभायां वक्तुम् इच्छति।
नेता सभा में बोलना चाहता है।
4. बालिका विद्यालये पठितुम् इच्छति ।
बालिका विद्यालय में पढना चाहती है।
5. कृष्णः ग्रामं गन्तुम् इच्छति।
कृष्ण गांव को जाना चाहता है।
6. त्वं गुरुं वन्दितुम् इच्छ ।
तुम गुरु का अभिवादन करना चाहो ।
7. कृषकः गां दोग्धुम् गच्छति ।
किसान गाय को दुहने को जाता है।
8. मल्लः मल्लं जेतुं शक्नोति ।
पहलवान पहलवान को जीत सकता है।
9. सा पीडां सोढुं जानाति।
वह दर्द को सहन करना जानती है।
10. पाचकः पक्तुं पाकशालां गच्छति।
रसोईया पकाने के लिए पाकशाला को जाता है।

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

सभा द्वारा कलकत्ता पुस्तक मेले वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में आर्य समाज बड़ा बाजार, कलकत्ता के सहयोग से 42वां अन्तर्राष्ट्रीय कलकत्ता पुस्तक मेला 31 जनवरी से 11 फरवरी 20018 सैन्ट्रल पार्क साल्टलेक कलकत्ता में स्टाल नं 461 गेट नं.3 में वैदिक साहित्य का प्रचार किया गया। पुस्तक मे मेले में लगभग 28 हजार रुपये मूल्य के वैदिक साहित्य की बिक्री हुई। पुस्तक मेले में सर्वश्री सुरेश अग्रवाल, सिद्धार्थ जायसवाल, अरविन्द सेठ, विरेश आर्य, कृष्णा जायसवाल का विशेष सहयोग रहा। - ***मन्त्री,आर्यसमाज बड़ा बाजार***

35वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मयूर विहार-1 के तत्त्वावधान में 35वां वार्षिकोत्सव 21 से 25 फरवरी के मध्य आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम के अन्तर्गत चतुर्वेद शतक यज्ञ स्वामी श्रद्धानन्द जी के ब्रह्मत्व में होगा, भजन श्रीमती सुदेश आर्या प्रस्तुत करेंगी। महिला सम्मेलन डॉ. संध्या शर्मा जी की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा।

-वीरेन्द्र कुमार महाजन, मंत्री

प्रथम स्थान प्राप्त किया

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के बोधोत्सव के उपलक्ष्य में उनकी जन्म-भूमि टंकारा गुजरात में महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित स्वामी विरजानंद पुरस्कार (योग दर्शन एवं वेदभाष्य प्रतियोगिता) में प्रभात आश्रम के विद्यार्थी तरुण कृष्ण ने प्रथम स्थान प्राप्त कर पांच सहस्र की प्रतियोगिता जीती। - ***आचार्य***

तिथियां परिवर्तित

आर्यसमाज जहांगीरपुरी के नए भवन का उद्घाटन

यज्ञ: प्रात: 9:30 बजे **उद्घाटन** - प्रात: 11 बजे **ऋषि लंगर:** 1 बजे

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं समस्त आर्य जनों की सूचनार्थ है कि आप सभी के सहयोग से आर्यसमाज जहांगीर पुरी नई दिल्ली के लिए क्रय किए गए भवन - के.- 1046 का उद्घाटन समारोह किन्हीं कारणों से 4 फरवरी से स्थगित होकर **रविवार 11 मार्च, 2018** को निश्चित किया गया है। कार्यक्रम प्रात: 9:30 बजे यज्ञ के साथ आरम्भ होगा।

अत: आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं एवं अपना सहयोग प्रदान करें। जल्दी ही सभा के निर्देशन में आर्यसमाज के इस नए भवन का निर्माण कार्य आरम्भ किया जाएगा।

- विनय आर्य, सभा महामन्त्री **रामभरोसे आर्य, मन्त्री, आर्यसमाज**

त्रिदिवसीय वार्षिक महोत्सव

गुरुकुल हरिपुर, जुनानी जि. नुआपड़ा ओड़िशा का त्रिदिवसीय वार्षिक महोत्सव 27 से 29 जनवरी के मध्य प्रेरक कार्यक्रमों के साथ गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शन देव आचार्य के सान्निध्य में गुरुकुल के आचार्य, अपाचार्य एवं कर्मठ कार्यकर्त्ताओं के पुरुषार्थ से निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर गुरुकुल में नवनिर्मित भवनों एवं चारदीवारी का लोकार्पण किया गया।

गुरुकुल हरिपुर के संचालक डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य द्वारा किये जा रहे आर्ष ग्रन्थों की रक्षा एवं पठन-पाठन कार्य हेतु आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई की ओर से 28 जनवरी को आचार्य जी को पं. युधिष्ठिर मीमांसक समृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। **-दिलीप कुमार जिज्ञासु, आचार्य**

शोक समचार

श्री प्रेम सागर गुप्ता जी निधन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित आर्य समाज सोहन गंज, निकट कमला नगर, दिल्ली के संरक्षक श्री प्रेम सागर गुप्ता जी का 8 फरवरी 2018 की प्रात: हृदयघात से निधन हो गया। वे लगभग 88 वर्ष के थे। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 20 फरवरी को गुरु जम्भेश्वर संस्थान, सिविल लाइन्स में सम्पन्न हुई।

श्रीमती रेखा गाबा दिवंगत

आर्य समाज पश्चिमपुरी, नई दिल्ली की कर्मठ सदस्या व आर्य कन्या गुरुकुल की पूर्व छात्रा श्रीमती रेखा गाबा धर्मपत्नी श्री इन्द्रजीत गाबा का 50 वर्ष की अल्पायु में हृदयगति रुकने से 31 जनवरी 2018 को देहान्त हो गया। आप अपने पीछे एक बेटी छोड़ गई हैं। 4 फरवरी को आयोजित श्रद्धांजलि सभा में आर्य समाज के सभी सदस्य व पदाधिकारियों ने अपने-अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों से निवेदन

1 अप्रैल, 2018 को मनाएं अधिकतम संख्या दिवस

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की सूचनार्थ निवेदन है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिनांक 1 अप्रैल, 2018 को अधिकतम संख्या दिवस आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि इस दिन अपनी-अपनी आर्यसमाज के यज्ञ एवं साप्ताहिक सत्संग में अवश्य ही सम्मिलित हों। समस्त आर्यसमाजों से भी निवेदन है कि इस हेतु अपनी तैयारियां करें। अपनी आर्यसमाज के समस्त सदस्यों को सूचित करें कि इस दिन के सत्संग में सब कार्य छोड़कर अवश्य सम्मिलित हों। इस सम्बन्ध में सभा द्वारा आवश्यक दिशा निर्देश शीघ्र जारी किए जाएंगे। सभा की ओर से सब आर्यसमाजों अपेक्षित सहयोग भी उपलब्ध कराया जाएगा। सबसे अधिक उपस्थिति वाली आर्यसमाज को सभा की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। इस दिन को अपनी आर्यसमाज का ऐतिहासिक दिन बनाएं। अत: अपनी आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग की उपस्थिति पंजीका के उस दिन की उपस्थिति की फोटो प्रति अपने पत्र के साथ सभा कार्यालय - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली के पते पर भिजवाना न भूलें। - ***विनय आर्य, महामन्त्री***

आर्य समाज सागरपुर द्वारा वेद कथा सम्पन्न

आर्य समाज सागरपुर एवं महिला सत्संग समिति द्वारा दिनांक 12 से 18 फरवरी तक नगरवन पार्क सागरपुर में सामवेद पारायण यज्ञ एवं संगीतमय वेद कथा का भव्य आयोजन किया गया। वेद कथा वाचक पं. देशराज 'सत्येच्छु' एवं संगीतज्ञ श्री पूरन सिंह जी ने बहुत सुन्दर प्रस्तुति दी। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा महामंत्री श्री विनय आर्य ने या पर बहुत सुन्दर चर्चा करते हुए या के वैज्ञानिक स्वरूप को रखा तथा शोध के परिणामों से भी सभी को अवगत कराया।

कार्यक्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य एवं श्रीमती वीणा आर्या ने पधार कर सभी आर्य जनों का उत्साह वर्धन किया। कार्यक्रम में आर्य वीरदल एवं आर्य वीरांगना दल के बच्चों ने मनमोहक प्रस्तुति दी। कार्यक्रम को सफल बनाने में सबसे अधिक परिश्रम श्रीमती विद्यावती आर्या एवं श्रीमती शकुन्तला देवी, श्रीमती ऊषा यादव, श्रीमती मीरा यादव, श्रीमती कुसुम, सर्वश्री राकेश कुमार, शीशपाल, कृष्ण पाल, अशोक कुमार, बचन सिंह आर्य, ब्रह्म प्रकाश यादव, मान्धाता सिंह आर्य, महेश चन्द्र मीणा एवं गोपाल सिंह योगी ने आयोजन को सफल बनाने में योगदान दिया। सभा प्रधान श्री सुखबीर सिंह आर्य ने सभी आगन्तुकों, आर्यवीर/वीरांगना, बच्चों, डी.डी.ए पार्क के कर्मचारियों एवं आर्य समाज के सहायक श्रीमती बसन्ती व चेतन आदि का धन्यवाद करते हुए लोगों को आर्य समाज से जुड़ने का आह्वान किया। - ***सुखबीर सिंह, प्रधान***

45वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

रामगली आर्य समाज मन्दिर, हरी नगर घन्टाघर, नई दिल्ली का 45वां वार्षिकोत्सव अथर्ववेद पारायण यज्ञ के साथ 16 से 18 फरवरी 2018 के बीच आचार्य अशोक कुमार शास्त्री के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। आचार्य रघुराज शास्त्री जी के प्रवचन तथा श्री हरीशंकर गुप्ता जी के मधुर भजन हुए। आचार्य रघुराज शास्त्री जी ने बच्चों के संस्कारों का निर्माण करने के लिए माता-पिता की भूमिका पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि डॉ. रवि भूषण (हापुड़) का शाल व स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया गया व बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। - **श्रीपाल आर्य, मंत्री**

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली

दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 19 फरवरी, 2018 से रविवार 25 फरवरी, 2018

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 22/23 फरवरी, 2018

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 21 फरवरी, 2018

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

दिल्ली की सभी आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से

आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य)

के तत्त्वावधान में

नव सम्वत्सर 2075 की पूर्व संध्या के अवसर पर

144 वाँ आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह

चैत्र अमावस्या विक्रमी सम्वत् 2074, तद्नुसार

शनिवार, 17 मार्च, 2018

स्थान - मावलंकर हॉल, रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001

कार्यक्रम

यज्ञ ..... दोपहर: 1.30 से 2.45 तक

दीप प्रज्वलन ..... दोपहर: 2.43 से 3.00 तक

सार्वजनिक सभा ..... दोपहर: 3.00 से 6.00 तक

इस अवसर पर वैदिक विद्वानों एवं आर्य कार्यकर्त्ताओं को स्मृति पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जायेगा।

'एक रूपीय यज्ञ' की प्रस्तुति में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले याज्ञिकों को सम्मानित किया जायेगा।

शान्ति पाठ एवम् प्रसाद वितरण

परिवार एवं इष्ट मित्रों सहित पहुँच कर कार्यक्रम को सफल बनायें

प्रतिष्ठा में,

इस वर्ष भारत की राजधानी नई दिल्ली में होगा

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - 2018 दिल्ली

25-26-27-28 अक्तूबर, 2018

समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थानों - विद्यालयों, गुरुकुलों, डी.ए.वी. स्कूलों एवं सहयोगी संस्थानों से निवेदन है कि महासम्मेलन की उपरोक्त तिथियों को नोट करें तथा इन तिथियों में आपना कोई भी आयोजन न रखें और दल-बल सहित अधिकाधिक संख्या में महासम्मेलन में पहुंचकर संगठन शक्ति का परिचय दें तथा इस सूचना को विभिन्न माध्यम से प्रचारित करें।

निवेदक

सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

धर्मपाल आर्य, प्रधान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द सेवाश्रम संघ परिसर में कन्या आश्रम के भवन का शिलान्यास

महाशय धर्मपाल जी के करकमलों द्वारा 6 फरवरी 2018 को महर्षि दयानन्द सेवाश्रम संघ परिसर थादला में कन्या आश्रम के भवन का शिलान्यास किया गया। दयानन्द सेवाश्रम संघ आगमन पर महाशय जी एवं अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री प्रकाश आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य, दयानन्द सेवाश्रम संघ के महामंत्री श्री जोगेन्द्र खट्टर एवं श्री नरेन्द्र नारंग का आश्रम के संचालक आचार्य दयासागर जी, श्री

जीववर्धन शास्त्री, शिवगंगा के श्री महेश शर्मा, श्री विश्वास सोनी, श्री ओम प्रकाश भट्ट, श्री गुलाब सिंह निनामा, श्री विजय सिंह राठौर, श्री नीरज भट्ट, विद्यार्थियों व आश्रम परिवार द्वारा स्वागत किया गया।

आश्रम में पधारने पर महाशय जी ने सर्वप्रथम कन्या आश्रम का शिलान्यास किया, इस अवसर पर विधायक कलसिंह भाबर, नगर परिषद अध्यक्ष श्री बंटी डामोर सहित आर्य समाज के कई प्रतिनिधिगण उपस्थित थे। शिलान्यास के उपरान्त आश्रम के विद्यार्थियों द्वारा रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया। महाशय जी ने बच्चों को 1 लाख रुपए और श्री प्रकाश आर्य जी ने 11 हजार रुपये के पुरस्कार प्रदान किये। विधायक श्री कलसिंह भाबर ने कन्या आश्रम के लिए 5 लाख रुपए का सहयोग देने की घोषणा की। कार्यक्रम का संचालन आचार्य दयासागर जी ने किया व आभार श्री विश्वास सोनी ने व्यक्त किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह